प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 05 दिसम्बर, 2016 को चिकित्सा विश्वविद्यालय के ट्रॉमा सेंटर के 5वीं मंजिल पर **के0जी0एम0यू0 यू0पी0 सामुदायिक नेत्र बैंक** का शुभारंभ **माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी** द्वारा किया गया। यह आई बैंक कॉर्नियल ब्लाइंड (कॉर्निया अंधता) को फिर से दृष्टि प्रदान करने के लिए समर्पित होगा। '' **द हांस फाउंडेशन''** द्वारा समर्थित और सीतापुर आई हॉस्पिटल ट्रस्ट के साथ तकनीकी साझेदारी में यह बैंक उत्तर प्रदेश में अपने प्रकार की पहली निजी–सार्वजनिक साझेदारी है। यह परिवारों को परामर्श देने से लेकर कॉर्निया/नेत्र संग्रह, प्रसंस्करण, सर्जन के बीच कॉर्निया वितरण तथा तकनीशियनों व सर्जनों को प्रशिक्षण देने जैसी व्यापक सेवाएं देगा। इन सभी कार्यो का अंतिम उद्देश्य कॉर्निया के दृष्टिहीनों की दृष्टि लौटाना है।

वैश्विक गैर–लाभकारी संस्था साईटलाइफ द्वारा संचालित यह आई–बैंक के0जी0एम0यू0 के ट्रॉमा सेंटर में मौजूद होगा। यहां चौबीस घंटे उच्च प्रशिक्षित स्टाफ मौजूद रहेंगे। यह आई–बैंक कॉर्निया की उपयुक्तता के सटीक निर्धारण के लिए उन्नत माइक्रोस्कोप टेक्नोलॉजी से सुसज्जीत होगा। इस सुविधा को राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1919 के साथ एकीकृत किया जायेगा, जो सभी पूछताछ को सीधे सामुदायिक बैंक से जोड़ेगा।

आई–बैंक के उद्घाटन समारोह में माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी ने कहा कि लखनऊ मे इस आई बैंक के माध्यम से एक नई दृष्टि आ रही है जो भविष्य में सबको आनंद देती रहेगी। हम गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम की बात करते है आज हमे यहा भी एक संगम देखने को मिल रहा है जो के0जी0एम0यू0, साईटलाइफ, द हांस फाउण्डेशन और सीतापुर आई हॉस्पिटल ट्रस्ट का संगम है और इस संगम के माध्यम से दुनिया न देख पाने वालो को भी इस दुनिया की सुन्दरता देखने का मौका मिलेगा। यह बड़ा ही पुण्य का काम है। हम इन चारो संस्थाओं का हार्दिक अभिनन्दन करते है। दुनिया मे सबके ज्यादा दृष्टीहीन भारत में ही है। पहले मोतिया बिन्दू के ऑपरेशन करने में बहुत समय लगता था अब यह ऑरेशन 5 मिनट मे हो जाता है। यह विज्ञान के तरक्की के कारण ही सम्भव हो सका है।

कार्यक्रम में **पद्मश्री प्रो0 रवि कांत जी**, कुलपति किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय ने कहा कि आई बैंक का प्रारम्भिक विचार सीतापुर आई हास्पिटल से आया जो कि लोगो के अंधता निवारण में कार्य कर रहा है। कार्नियल अंधता का आंकड़ा देखने के बाद हमने यह निश्चय किया कि हमे यह कार्य 3 अंको मे ना करके चार अंको में करना होगा तब हम अपने उद्देश्य को पा सकेंगे। इसके लिए हमे कई हाथों का साथ मिला जैसे साईटलाइ, और द हांस फाउण्डेशन जैसे संस्थाओं का। हम श्री पैट्रिक और डॉ0 अरून शर्मा के शुक्रगुजार है जिन्होनें इस कार्य में बहुत ही सहयोग दिया।

श्रीमती क्लेयर बोनेलीया, ग्लोबल आफिसर साईटलाईफ ने बताया की साईटलाईफ की स्थापना सिएटल में 1969 में की गयी थी । यह विश्व का एकमात्र स्वास्थ्य संगठन है, जो 2040 तक पूरी दुनिया से कॉर्नियल अंधता को समाप्त करने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। उत्तर प्रदेश भारत की सघन आबादी वाला राज्य है। इसकी जनसंख्या अमेरिका की आबादी की दो–तिहाई है। अमेरिका में पिछले वर्ष करीब 50 हजार प्रत्यारोपण हुए थे, जबकि

उत्तर प्रदेश में केवल 650 कॉर्निया प्रत्यारोपण किये गये। इस दृष्टिकोण से यह आई–बैंक अहम रोल निभायेगा जिससे हम यू0पी0 मे कार्निया ट्रांसप्लांट को बढ़ा सके। हमारी संस्था पूरी दुनिया मे 33 देशों की साझेदारी के साथ लोगो के जीवन को रूपांतरित करने के लिए प्रत्येक वर्ष कॉर्निया प्रत्यारोपण की संख्या बढ़ा रही है। यह आई बैंक जीवन को परिवर्तित करने वाली सर्जरी प्रदान करने में हमे सक्षम बनायेगा और अंधेरे में इंतजार कर रहे अधिसंख्य लोगो को दोबारा दृष्टि प्रदान करेगा।

कार्यक्रम में ले0जन, एस एम मेहता, सीईओ, द हंस फाउंडेशन ने अपने वक्तव्य में कहा कि '' **नेत्र सेवा**'' द हांस फाउंडेशन द्वारा समर्थित स्वास्थ्य हस्तक्षेपों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। लखनऊ में इस आई बैंक की स्थापना के0जी0एम0यू0 और साईटलाइफ को समर्थन उत्तर प्रदेश में इस दिशा में हमारी जारी वचनबद्धता को दर्शाता है। टीएचएफ ऐसी कई परियोजनाओं को मदद कर रहा है, जहां दृष्टिहीनों को ईलाज और सेवाएं प्रदान की जाती है। हम मानते है कि उत्तर प्रदेश में यह अपने प्रकार का पहला आई बैंक है जो राज्य में कॉर्नियल ब्लाइंडनेस के प्रतिक्षित मामलों को कम करने और नेत्र दान को लेकर जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योग दान देगा।

कार्यक्रम में कॉर्निया ट्रांसप्लांट में योगदान देने वाले कुछ चिकित्सकों और अन्य लोगो को सम्मानित भी किया गया। जिनमे डॉ0 पुनम किशोर, डॉ0 गौरव, डॉ0 नेहा सिंह, शिशुपाल गौंड, जी0के0 सेठ, सुनिल श्रीवास्तव और एकता पांडेय शकुंतला विश्वविद्यालय की छात्रा थी।

कार्यक्रम के अंत में डॉ0 अरून शर्मा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।